

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ तिहत्तर

पापाई परछाइयाँ: 'हिटलर का पोप' के पीछे के प्रभाव और इरादों का खुलासा

Jeff Pippenger

2024-04-03

हिटलर्स पोप शीर्षक पुस्तक में, लेखक जॉन कॉर्नवेल उस भावी पोप की कथा का आरंभ उसके दादा और पोप पायस नवम से करते हैं, जिन्हें रोम नगर से निकाल दिया गया था; वही भावी पोप उस समय शासन कर रहा था जब हिटलर जर्मनी पर राज्य कर रहा था। जब पायस नवम एक नन का वेश धारण करके रोम नगर से भागे, तब वे अपने साथ केवल एक ही व्यक्ति को ले गए—उस भावी पोप के दादा को। कॉर्नवेल इन दोनों पुरुषों के निकट संबंध पर विचार करता है, और इसके पश्चात यह भी दर्शाता है कि भावी पोप का पिता भी किस प्रकार कैथोलिक कलीसिया के शक्ति-केंद्र से जुड़ा हुआ था। ऐसा करते हुए वह पायस नवम के समय से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक के इतिहास के सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परिवेश को रेखांकित करता है। इतिहास का यह सिंहावलोकन अत्यन्त ज्ञानवर्धक है।

पोपीय दावेदारी में एक और कदम तब उठाया गया, जब ग्यारहवीं शताब्दी में पोप ग्रेगरी सप्तम ने रोमी कलीसिया की परिपूर्णता की घोषणा की। जिन प्रस्तावों को उन्होंने प्रस्तुत किया, उनमें एक यह था कि पवित्र शास्त्र के अनुसार कलीसिया ने कभी त्रुटि नहीं की है और न आगे कभी करेगी। परंतु इस कथन के साथ पवित्र शास्त्र के प्रमाण प्रस्तुत नहीं किए गए। उस गर्वीले पोप ने सम्राटों को पदच्युत करने की शक्ति का भी दावा किया, और घोषित किया कि उसके द्वारा दिए गए किसी भी निर्णय को कोई उलट नहीं सकता, जबकि दूसरों के सभी निर्णयों को पलट देना उसका विशेषाधिकार है।

अभ्रान्तता के इस समर्थक के निरंकुश चरित्र का एक उल्लेखनीय उदाहरण जर्मन सम्राट हेनरी चतुर्थ के साथ उसके व्यवहार में देखने को मिला। पोप के अधिकार की अवहेलना करने का साहस करने पर, इस सम्राट को धर्म से बहिष्कृत और सिंहासनच्युत घोषित कर दिया गया। अपने ही राजकुमारों द्वारा साथ छोड़ देने और धमकियों से भयभीत होकर—जिन्हें पोप के फरमान ने उसके विरुद्ध विद्रोह के लिए उकसाया था—हेनरी ने रोम से मेल-मिलाप करना आवश्यक समझा। अपनी पत्नी और एक विश्वासयोग्य सेवक के साथ वह कड़ाके की सर्दियों में आल्प्स पार कर गया, ताकि पोप के सामने स्वयं को दीन कर सके। उस किले पर पहुँचने पर, जहाँ ग्रेगरी चले गए थे, उसे उसके अंगरक्षकों के बिना बाहरी प्रांगण में ले जाया गया, और वहाँ, जाड़े की भीषण ठंड में, नंगे सिर, नंगे पाँव और दीन-हीन वस्त्रों में, वह पोप की उपस्थिति में प्रवेश की अनुमति की प्रतीक्षा करता रहा। तीन दिन तक उपवास और स्वीकारोक्ति करते रहने के बाद ही पोप ने कृपा कर उसे क्षमा प्रदान की। तब भी यह केवल इस शर्त पर था कि सम्राट राजचिह्न धारण करने या राजसत्ता का प्रयोग करने से पहले पोप की स्वीकृति की प्रतीक्षा करेगा। और अपनी विजय से उन्मत्त ग्रेगरी ने डींग मारी कि राजाओं के अभिमान को धराशायी करना उसका कर्तव्य है।

ग्रेगरी सप्तम "अभ्रम्यता के समर्थक" थे, लेकिन वह हास्यास्पद दावा पायस नवम तक आधिकारिक सिद्धांत (डॉग्मा) नहीं बनाया गया; उसी ने प्रथम वैटिकन परिषद में उस मूर्खतापूर्ण दावे को एक स्थापित सिद्धांत बना दिया। यह सिद्धांत 18 जुलाई, 1870 को पारित किया गया था, जो एक लाख चवालीस हजार वालों की पहली निराशा से ठीक डेढ़ सौ वर्ष पहले था।

इतिहास से महत्वपूर्ण बात यह समझ में आती है कि जब पोप पायस नवम ने प्रथम वैटिकन परिषद का आयोजन किया और पोप की अचूकता के अपने सिद्धांत को लागू किया, तो यह कदम 'आधुनिकतावाद' कहलाने वाली धारणा के प्रति उनकी घृणा से प्रेरित था। यह इस विचार पर आधारित नहीं था कि बाइबिल संबंधी सिद्धांतों को परिभाषित करते समय पोप कोई त्रुटि नहीं कर सकता; बल्कि यह फ्रांसीसी क्रांति से उत्पन्न प्रभाव के विरुद्ध पोप की विरोधी

स्थिति का बचाव था। यह उस विचार के खिलाफ लक्षित था जिसे अंततः साम्यवाद के नाम से जाना जाने लगा।

फ्रांसीसी क्रांति ने यूरोपीय देशों की शासकीय संरचना में भारी उथल-पुथल मचा दी, और विशेषकर पापत्व रूपी राजतंत्र के प्रति गहरी घृणा को जन्म दिया। एक इतालवी गणतंत्री विद्रोह ने पायस नवम और उनके विश्वस्त सहयोगी को अस्थायी रूप से रोम से बाहर निकाल दिया था। फ्रांसीसी क्रांति से उपजी विभिन्न दार्शनिक धाराओं से व्यक्त 'आधुनिकतावाद' पायस नवम का कट्टर शत्रु था, और उनकी अभ्रम्यता का सिद्धांत इस उद्देश्य से स्थापित किया गया था कि फ्रांसीसी क्रांति से उपजे आधुनिकतावादी विचारों के विरुद्ध पोप द्वारा किए गए हर दावे को सहारा दिया जा सके।

दानियेल अध्याय ग्यारह, पद चालीस यह दर्शाता है कि सन् 1798 में दक्षिण के राजा (नास्तिक फ्रांस) ने उत्तर के राजा (पापाई सत्ता) को घातक घाव पहुँचाया।

पायस नवम का अचूकता का सिद्धांत दानियेल ग्यारह के चालीसवें पद में निरूपित युद्ध से संबंधित था, और 1869 के उत्तरार्ध से लेकर अगले वर्ष तक पायस नवम ने प्रथम वैटिकन परिषद्, जो वैटिकन 1 के नाम से जानी जाती है, इस उद्देश्य से बुलाई कि यह पुष्टि की जाए कि पोप कैथोलिक धर्म का प्रधान है, और कैथोलिक धर्म समस्त कलीसियाओं का प्रधान है, जैसा कि 533 ईस्वी में जस्टिनियन की आज्ञाप्ति द्वारा घोषित किया गया था।

द्वितीय वैटिकन परिषद्, जिसे वैटिकन द्वितीय भी कहा जाता है, 1962 से 1965 तक आयोजित हुई। यह कैथोलिक चर्च के इतिहास में एक मील का पत्थर घटना थी और आधुनिक समय की सबसे महत्वपूर्ण विश्वव्यापी परिषदों में से एक थी। यह परिषद् पोप जॉन तेईसवें के नेतृत्व में आरंभ हुई और 1963 में जॉन तेईसवें के निधन के बाद पोप पॉल षष्ठम के कार्यकाल के दौरान जारी रही। इन दोनों परिषदों के बीच स्पष्ट भेद को पहचानना महत्वपूर्ण है।

प्रथम परिषद् का उद्देश्य पोप की तथाकथित "प्रधानता" की स्थापना करना था, जिसका अर्थ यह है कि पोप कलीसिया का सर्वोच्च शासक, शिक्षक और चरवाहा है, और विश्वास के सिद्धांतों का संरक्षण तथा उनकी व्याख्या करने के लिए उत्तरदायी है। उसका अधिकार डॉग्माओं को परिभाषित करने, सिद्धांतगत अधिनियम जारी करने, तथा विश्वास और नैतिकता के विषयों पर प्रामाणिक घोषणाएँ करने में निहित था, जिसे पोपीय अचूकता के नाम से जाना जाता है। इसमें समस्त कलीसिया पर पोप का न्यायिक-अधिकारिक अधिकार भी सम्मिलित है, जिसमें बिशपों की नियुक्ति करने, संस्कारों का विनियमन करने, और कलीसिया के प्रशासन का संचालन करने की शक्ति शामिल है।

दूसरी परिषद् का उद्देश्य चर्च को एक एक्यवादी स्वरूप की ओर मोड़ना था। ये परिषदें अपने उद्देश्य में एकदम परस्पर-विरोधी थीं। रूढ़िवादी पहली परिषद् का उदारवादी दूसरी परिषद् ने खंडन किया। वे दोनों धड़े रात और दिन जितने अलग थे, और फातिमा के तीन रहस्यों से जुड़ी जो भविष्यवाणी है, वह एक आंतरिक युद्ध की ओर संकेत करती है, जिसका उपयुक्त प्रतिनिधित्व इन दो परिषदों द्वारा होता है।

यह भविष्यवाणी दो वर्गों की पहचान करती है: एक, जो Pius IX द्वारा निरूपित प्रधानता का समर्थन करता है और जिसे "सफेद पोप," "अच्छा पोप," या "अच्छा बिशप" कहा जाता है; और दूसरा, जो Vatican II से संबद्ध है और जिसे "काला पोप," "बुरा पोप," या "बुरा बिशप" द्वारा दर्शाया गया है। इन दो राजनीतिक अवधारणाओं का विवाद तब दृष्टिगोचर होता है जब आप फातिमा, पुर्तगाल में फातिमा के चमत्कार के तीर्थस्थल पर जाते हैं। अंदर प्रवेश करते समय, प्रवेश-पथ एक ओर काले पोप की प्रतिमा और दूसरी ओर सफेद पोप की प्रतिमा के बीच से होकर जाता है।

इस प्रकार, जिसे पुस्तक हिटलर का पोप कहती है और जो अंततः वही बनता है, उस व्यक्ति की विरासत का हिस्सा यह बन जाता है कि उसकी जड़ें आधुनिकतावाद (दक्षिण का राजा) और पोप की प्रधानता (उत्तर का राजा) के बीच के संघर्ष में गुंथी हुई हैं।

यह समझा जाना चाहिए कि जिस पुस्तक पर हम विचार कर रहे हैं, उसका लेखक रोमन कैथोलिक कलीसिया का एक प्रतिष्ठित सदस्य था, और उस पुस्तक को लिखने का उसका घोषित उद्देश्य इस दावे पर प्रकाश डालना था कि

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान शासन करने वाले पोप ने हिटलर, नाज़ियों का समर्थन किया था, अथवा यहूदियों और अन्य लोगों के विरुद्ध हुए होलोकॉस्ट में किसी प्रकार का दोष वहन किया था। जब कॉर्नवेल पायस द्वादश के दादा का उल्लेख करता है, जो Vatican 1 परिषद् को अभिषिक्त करने वाले प्रमुख सहयोगी थे, तब दक्षिण और उत्तर के राजाओं के संघर्ष का इतिहास उसी इतिहास में प्रत्यक्ष रूप से अभिनीत होता हुआ दिखाई देता है। जब "Republicanism" की क्रान्ति इटली तक पहुँची, तब लगभग एक वर्ष तक इटालियों ने पायस नवम को रोम नगर से बाहर निकाल दिया, और तब से, उसके लौट आने के बाद भी, पोपसत्ता के पास केवल वही एक सौ दस एकड़ भूमि रही है, जिसे Vatican City के नाम से जाना जाता है।

वह केवल फ्रांसीसी सैनिकों की सहायता और कुख्यात यहूदी बैंकरों, रॉथ्सचाइल्ड्स, से लिए गए ऋण के बल पर ही वेटिकन लौटने में समर्थ हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान होलोकॉस्ट में पोपपद की संलिप्तता को बुद्धिसंगत रीति से समझने के लिए, मसीह के क्रूस पर चढ़ाए जाने के समय से यहूदियों के प्रति यूरोप के दृष्टिकोण की कुछ मूलभूत समझ अपेक्षित है। यह पुस्तक संकेत करती है कि यहूदी-विरोध और नस्लवाद दो भिन्न मनोवृत्तियाँ हैं, यह दावा करते हुए कि यहूदियों के प्रति हिटलर की घृणा नस्लवादी थी, क्योंकि हिटलर यहूदियों को मनुष्यों की एक हीन श्रेणी के रूप में देखता था, जबकि यहूदी-विरोध यहूदियों से इसलिए घृणा करना था कि उन्होंने परमेश्वर की हत्या की। चाहे वे दोनों एक ही हों, या वास्तव में उन दोनों के बीच कोई भेद हो, यहूदियों की दुर्दशा की वास्तविकता समझे जाने योग्य है।

उदाहरण के लिए, आज अमेरिका में यदि "ghetto" शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो अधिकांश लोग इसे नगर के निर्धन, जर्जर भाग की परिभाषा समझते हैं। किंतु "ghetto" शब्द मूलतः नगर के एक ऐसे भाग को सूचित करता था, विशेषकर वेनिस, इटली में, जहाँ मध्य युग के दौरान यहूदियों को रहने के लिए विवश किया जाता था। प्रथम ghetto की स्थापना 1516 में वेनिस में हुई, जब वेनिस गणराज्य ने यहूदियों को नगर के एक निर्दिष्ट क्षेत्र तक सीमित कर दिया, जिसे "geto nuovo" (नई फाउंड्री) के नाम से जाना जाता था, और जो अंततः ghetto के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पूरे मध्य युग के दौरान यूरोप में, यहूदियों पर यह प्रतिबंध थे कि वे कहाँ रह सकते थे और वे कौन-से पेशे अपना सकते थे। ये प्रतिबंध यहूदी-विरोध की पुरानी परिभाषा पर आधारित थे, जो इस विश्वास की ओर संकेत करती थी कि यहूदियों ने ईश्वर की हत्या की थी, और यह कि उसके बाद उनकी सारी समस्याएँ उनके अपने कर्मों के कारण स्वयं उन पर आईं।

मध्य युग में यह एक स्थापित परम्परा थी कि मसीही न तो धन उधार दे सकते थे और न ही ऋण पर ब्याज स्वीकार कर सकते थे। यहूदी इस प्रतिबन्ध से मुक्त थे, और धन उधार देना उन व्यवसायों में से एक बन गया जिन्हें करने की यहूदियों को अनुमति थी। रॉथ्सचाइल्ड परिवार जैसे यहूदी बैंकर, उन कानूनी प्रतिबन्धों के प्रत्युत्तर में मुद्रा-विनिमय करने वाले बने, जो इस बात पर लगाए गए थे कि उन्हें कौन-कौन से व्यवसाय करने की अनुमति थी। जब Pius IX को वेटिकन लौटने के लिए धन की आवश्यकता हुई, तब रोम नगर पर अब शासन न कर पाने की उनकी खीझ इस आवश्यकता के कारण और भी बढ़ गई कि धन के लिए उन्हें यहूदियों की ओर हाथ बढ़ाना पड़ा।

रोम से निकाले जाने से पूर्व पायस नवम यहूदियों तथा यहूदियों के प्रति कलीसिया के संबंध के विषय में मानो दो में से किसी एक पक्ष में प्रतीत होते थे। ये दो पक्ष उन लोगों के थे जो यह मानते थे कि यहूदियों के साथ चाहे जो कुछ भी हो, वे केवल वही पा रहे हैं जिसके वे अधिकारी हैं; और दूसरा पक्ष यहूदियों के प्रति कुछ मात्रा में दया प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति रखता था। निर्वासन के बाद जब पायस नवम वेटिकन लौटे, तब जो दया उन्होंने अपने निर्वासन से पूर्व कभी-कभी प्रकट की थी, वह फिर कभी प्रकट नहीं हुई। अपने निर्वासन से पहले उन्होंने रोम नगर के यहूदी-बाड़े को बंद कर दिया था, और अपनी वापसी के बाद उन्होंने उस यहूदी-बाड़े को पुनः स्थापित किया, तथा अपनी आर्थिक हानियों की पूर्ति के लिए यहूदियों पर करारोपण आरंभ किया।

पोप पायस नवम के दाहिने हाथ मार्कान्टोनियो पाचेली थे, जो हिटलर के पोप के दादा थे। वे ऐसे अधिवक्ता थे जो पापत्व का समर्थन करने वाले अधिवक्ताओं के एक विशेष वर्ग से संबंधित थे। उनके पुत्र उसी अभिजात अधिवक्ता वर्ग का हिस्सा बने, और उनके पौत्र भी, जो अंततः हिटलर के पोप बने। यूजेनियो पाचेली के दादा, उनके पिता, तथा उनके युवाकाल और शिक्षा का इतिहास प्रस्तुत करने के बाद, पुस्तक उस पद पर आती है जिसे पाचेली ने पापत्व के लिए अपना कार्य आरंभ करते समय संभाला। अभिजात पापल अधिवक्ताओं के वंशज एक अधिवक्ता के रूप में, उन्हें एक ऐसे विभाग का प्रमुख चुना गया जो अनुबंधों में विशेषज्ञ था, जिन्हें कॉनकॉर्ड्स कहा जाता है। 1901 में पाचेली को पापल राज्य सचिवालय के कार्यालय में नियुक्त किया गया।

पाचेली राष्ट्रों के लिए दूत बन गए। भविष्यसूचक रूप से, पाचेली वह कानूनी संपर्क-कड़ी बन गए जिसने पृथ्वी के राजाओं का पापाई सत्ता के साथ व्यभिचार संपन्न कराया। 1903 में पायस दसवें का पोप के रूप में अभिषेक हुआ। तुरंत ही उन्होंने उस "बौद्धिक ज़हर" पर हमला करना शुरू किया जो "सापेक्षवाद और संशयवाद" पैदा करता था। "आधुनिकतावाद" के उन्मूलन के लिए पायस दसवें के प्रयासों को संचालित करने वाला व्यक्ति उम्बेर्तो बेनिनी था, जो पाचेली के ही उसी कार्यालय में काम करता था। बेनिनी ने एक बार विश्व-स्तरीय इतिहासकारों के एक समूह के बारे में कहा था कि वे ऐसे लोग हैं जिनके लिए "इतिहास कुछ नहीं बल्कि उल्टी करने की लगातार हताश कोशिश है। ऐसे किस्म के मनुष्य के लिए केवल एक ही इलाज है: इन्क्विज़िशन!" बेनिनी के अनुसार, कोई भी इतिहासकार जो फ्रांसीसी क्रांति से निकले विचारों के प्रति तनिक भी सहानुभूति व्यक्त करता, उसे मृत्युदंड दिया जाना चाहिए था।

आधिकारिक रूप से, बेनिनी पापसी के लिए प्रचार मंत्रालय चलाते थे, लेकिन अनौपचारिक रूप से वे एक गुप्तचर जाल भी संचालित करते थे, जिसका उद्देश्य उन किसी भी कैथोलिक की पहचान करना था जिन्हें "आधुनिकतावाद" के प्रति सहानुभूति हो, जो "दक्षिण के राजा" से उत्पन्न हुआ था। अंततः 1910 में, उनके काम के परिणामस्वरूप एक निर्देश जारी हुआ, जिसने पापसी के कर्मचारियों के लिए "प्रतिआधुनिकतावादी शपथ" नामक शपथ लेना अनिवार्य कर दिया। यह आज भी लागू है। वैटिकन में रोजगार पाने के लिए आपको आधुनिकतावादी विचारों से घृणा करने की शपथ खानी होती है, जिन्हें आज हम साम्यवादी विचार कहते हैं।

क्रोनवेल की पुस्तक के सार में, फ्लायलीफ़ पर लिखा है, "सदी के पहले दशक में, एक प्रतिभाशाली युवा वैटिकन वकील के रूप में, Pacelli ने पोप की अभूतपूर्व सत्ता की एक विचारधारा को आकार देने में मदद की; 1920 के दशक में उसने चालाकी और ब्लैकमेल का सहारा लेकर जर्मनी में सत्ता थोपने का काम किया। 1933 में, हिटलर उनके लिए आदर्श वार्ता-भागीदार बन गया और एक संधि स्थापित की गई, जिसने कैथोलिक चर्च को धार्मिक और शैक्षिक लाभ प्रदान किए; इसके बदले कैथोलिकों को सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों से हट जाना था। रोम से थोपे गए राजनीतिक कैथोलिकवाद के इस 'स्वैच्छिक' त्याग ने नाज़ीवाद के उदय को सुगम बनाया।"

14 जुलाई, 1933 को हुई एक मंत्रिमंडलीय बैठक में, एडॉल्फ हिटलर ने उसी महीने यह राय व्यक्त की कि पाचेली द्वारा नाज़ियों के साथ निर्मित कॉनकॉर्डेंस ने जर्मनी को 'विश्वास का एक क्षेत्र.... अंतरराष्ट्रीय यहूदियों के विरुद्ध विकसित हो रहे संघर्ष में' प्रदान किया।

कॉनवेल की पुस्तक को उन कैथोलिकों ने अच्छी तरह स्वीकार नहीं किया जिन्होंने उस प्रमाण को स्वीकार करने से इंकार कर दिया कि पाचेली ही वह मुख्य कारण था जिसके कारण हिटलर सत्ता तक पहुँच सका, क्योंकि जर्मनी में कैथोलिक बहुसंख्यक थे। पाचेली ने ऐसा एक समझौता किया था जिसने 1933 के बाद से कैथोलिक प्रकाशन-गृह, कैथोलिक समाचार एजेंसियों और कैथोलिक विद्यालयों को हिटलर की दिशा के विषय में कुछ भी कहने से रोक दिया। यह पुस्तक पाचेली की स्पष्ट यहूदी-विरोधी प्रवृत्ति का अनुगमन करती है, जो तत्पश्चात द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पोप बना। इस पुस्तक के आधार पर अत्यन्त विश्वसनीय ऐतिहासिक स्रोतों से कम-से-कम तीन बातें स्थापित की जा सकती हैं।

पहला, उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा का वह युद्ध है, जैसा कि दानिय्येल अध्याय ग्यारह में प्रस्तुत किया गया है। उस युद्ध में शत्रु हैं—नास्तिकता के विरुद्ध कैथोलिकवाद, साम्यवाद के विरुद्ध पोप। दूसरा बिंदु यह है कि द्वितीय विश्व

युद्ध के दौरान पोप ने नास्तिकता के विरुद्ध अपनी प्रतिनिधि सेना के रूप में नाज़ीवाद का उपयोग किया, ठीक वैसे ही जैसे 1989 में पोप ने यूएसएसआर की नास्तिकता के विरुद्ध अपनी प्रतिनिधि सेना के रूप में धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद का उपयोग किया। यह पुस्तक उस आंतरिक और बाह्य भविष्यवाणीगत संरचना की भी पहचान करती है, जो फ्रांतिमा के चमत्कार से निकले हुए शैतानी संदेशों द्वारा प्रस्तुत की गई है।

दानियेल ग्यारह के पद ग्यारह और बारह में प्रतिरूपित राफिया का सीमांत-युद्ध, उस सीमांत-युद्ध का प्रतिनिधित्व करता है जो वर्तमान में यूक्रेन में घटित हो रहा है। प्राचीन युद्ध एक उष्ण युद्ध था; दूसरा, दूसरा प्रतिनिधि-युद्ध है, जिसमें प्रतिनिधि सेनाएँ प्राणघातक मुठभेड़ में संलग्न हैं। राफिया इस सीमांत-युद्ध की पहचान उत्तर के राजा और दक्षिण के राजा के बीच होने वाले युद्ध के रूप में कराता है, परन्तु भविष्यवाणी यह सिखाती है कि शीघ्र आने वाले रविवार-विधि तक सोर की वेश्या भुला दी गई है, ईज़ेबेल शोमरोन में है, और हेरोदियास हेरोदेस के जन्मदिन के भोज में अनुपस्थित रही। वर्तमान इतिहास में उत्तर के राजा की भूमिका के ये तीन साक्षी यह दर्शाते हैं कि वह परदे के पीछे रहकर डोरियाँ खींच रही है। वे उष्ण युद्ध, प्रतिनिधि-युद्ध और शीत युद्ध, जो उसके भुला दिए जाने के समय घटित होते हैं, उसकी प्रतिनिधि सेनाओं के द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं।

रूस दक्षिण का राजा है, और वह इस समय एक सीमावर्ती युद्ध में संलग्न है, जिसका वित्त-पोषण पश्चिमी संसार के वैश्विकतावादियों द्वारा किया जा रहा है, मुख्यतः संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रगतिशील डेमोक्रेटों और RINO (केवल नाम के रिपब्लिकन) रिपब्लिकनों द्वारा। जब दानियेल ग्यारह के चालीसवें पद में संयुक्त राज्य अमेरिका को उत्तर के राजा की प्रतिनिधि सेना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब उसकी दो भविष्यवाणीगत विशेषताएँ सैन्य सामर्थ्य और आर्थिक शक्ति हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका यूक्रेन में वही कार्य कर रहा है जो उसने 1989 में किया था—रूस के विरुद्ध पोप की सहायता करना—और भूमि पर उपस्थित प्रतिनिधि सेना, जो यूक्रेन की रक्षा कर रही है, नाज़ी समर्थकों से इतनी भरी हुई है कि मुख्यधारा का मीडिया भी इसका इनकार नहीं कर सकता। रोम अब उन्हीं प्रतिनिधि सेनाओं का उपयोग कर रहा है जिनका उसने रूस के विरुद्ध उस उग्र युद्ध में किया था जो द्वितीय विश्व युद्ध था, और 1989 में भी। यह पुस्तक पढ़ें: *Hitler's Pope, the Secret History of Pius XII*.

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

इसी प्रकार, जब परमेश्वर प्रिय यूहन्ना के सामने भावी युगों के लिए कलीसिया का इतिहास खोलने ही वाले थे, तो उन्होंने उसे यह प्रकट करके कि 'मनुष्य के पुत्र के समान एक' दीपदानों के बीच चलता फिरता है—जो सात कलीसियाओं का प्रतीक थे—उद्धारकर्ता की अपनी प्रजा के प्रति रुचि और देखभाल का आश्वासन दिया। जब यूहन्ना को कलीसिया के पृथ्वी की शक्तियों के साथ अंतिम महान संघर्ष दिखाए गए, तब उसे विश्वासयोग्यों की अंतिम विजय और छुटकारा भी देखने की अनुमति मिली। उसने देखा कि कलीसिया उस पशु और उसकी मूरत के साथ घातक संघर्ष में ला खड़ी की गई है, और उस पशु की पूजा मृत्युदंड की धमकी के साथ लागू की जा रही है। परन्तु युद्ध के धुँएँ और कोलाहल से परे दृष्टि डालते हुए, उसने सिय्योन पर्वत पर मेम्ने के साथ एक मंडली को देखा, जिनके माथों पर पशु की छाप के स्थान पर 'पिता का नाम लिखा हुआ' था। और फिर उसने देखा कि 'जिन्होंने पशु, और उसकी मूरत, और उसकी छाप, और उसके नाम की संख्या पर जय पाई थी, वे काँच के समुद्र पर खड़े हैं, और उनके पास परमेश्वर की वीणाएँ हैं' और वे मूसा और मेम्ने का गीत गा रहे हैं।

ये पाठ हमारे हित के लिए हैं। हमें अपना विश्वास परमेश्वर पर दृढ़ रखना चाहिए, क्योंकि हमारे सामने ही ऐसा समय आने वाला है जो मनुष्यों की आत्माओं की परीक्षा लेगा। मसीह ने जैतून के पहाड़ पर उन भयावह न्यायों का वर्णन किया जो उनके दूसरे आगमन से पहले होने थे: 'तुम युद्धों और युद्ध की अफवाहों के विषय में सुनोगे।' 'राष्ट्र राष्ट्र के विरुद्ध, और राज्य राज्य के विरुद्ध उठ खड़े होंगे; और स्थान-स्थान पर अकाल, महामारी और भूकंप होंगे। ये सब पीड़ाओं का आरंभ है।' यद्यपि यरूशलेम के विनाश के समय ये भविष्यवाणियाँ आंशिक रूप से पूरी हुईं, फिर भी ये अंतिम दिनों पर अधिक प्रत्यक्ष रूप से लागू होती हैं।

हम महान और गंभीर घटनाओं की दहलीज़ पर खड़े हैं। भविष्यवाणी तेजी से पूरी हो रही है। प्रभु द्वार पर हैं। शीघ्र ही हमारे सामने ऐसा काल खुलने वाला है जो सभी जीवितों के लिए अत्यन्त महत्व का होगा। अतीत के विवाद फिर उभरेंगे; नए विवाद उठेंगे। हमारे संसार में जो दृश्य घटित होने वाले हैं, उनके बारे में अभी तक स्वप्न में भी नहीं सोचा गया है। शैतान मानवीय माध्यमों से काम कर रहा है। जो लोग संविधान में परिवर्तन करने और रविवार के पालन को लागू करने वाला कानून बनवाने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें यह बहुत कम एहसास है कि इसका परिणाम क्या होगा। एक संकट हमारे बिल्कुल सिर पर आ खड़ा हुआ है।

"परन्तु इस महान संकट में परमेश्वर के दासों को अपने ऊपर भरोसा नहीं रखना चाहिए। यशायाह, यहजेकेल और यूहन्ना को दिए गए दर्शनों में हम देखते हैं कि स्वर्ग पृथ्वी पर घटित हो रही घटनाओं से कितना घनिष्ठ रूप से जुड़ा है और जो उसके प्रति निष्ठावान हैं उनके लिए परमेश्वर की देखभाल कितनी महान है। संसार बिना शासक के नहीं है। आगामी घटनाओं का क्रम प्रभु के हाथ में है। स्वर्ग के महामहिम के अधीन राष्ट्रों की नियति, और उसकी कलीसिया के मामले भी, उसी की अपनी देखरेख में हैं।" टेस्टिमोनीज़, खंड 5, 752, 753.